ISSN : 2581-8848

विशेषांक भाग – III

जनवरी, 2026

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. प्रदीप पाटील

संपादकीय

गीत और ग़ज़ल सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं है। वास्तविक रूप में हिंदी साहित्य के व्यापक परिदृश्य में गीत और ग़ज़ल दो ऐसे प्रमुख विधाएँ हैं जिनके माध्यम से मानव जीवन की संवेदनाएँ, विचार, अनुभूतियाँ और सामाजिक यथार्थ अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं। साहित्य के शुरुआती दौर से ही गीतों की भूमिका अहम रही है। लिखित साहित्य से पहले मौखिक रूप में गीत मानवीय संवेदना को चित्रित करने का काम करते रहे हैं। साथ ही अपनी परंपराओं की मुखरवानी गीत ही रहे हैं। गीत भावनात्मक सौंदर्य, प्रेम, करुणा और प्रकृति के सौंदर्यबोध का प्रतिनिधित्व करते हैं। ग़ज़ल की शुरुआत भले ही हाला और सुंदरी से शुरू हुई लेकिन कालांतर में ग़ज़ल ने जीवन की गूढ़ सच्चाइयों, विडंबनाओं और सामाजिक विषमताओं को लयात्मक रूप में प्रस्तुत किया। बदलते समय, समाज और राजनीति के साथ इन विधाओं का रूप, विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति निरंतर परिवर्तित होती रही है। इसी परिवर्तनशीलता के अध्ययन से इनकी विविधता और गहराई का बोध होता है। इस विशेषांक के अंतर्गत "हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य" इस विषय पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया है।

हिंदी गीत और ग़ज़ल समाज के दर्पण हैं, जो समय-समय पर बदलते सामाजिक परिवेश, मानवीय संबंधों और मूल्यबोध को प्रतिबिंबित करते रहे हैं। इन विधाओं ने लोकमानस की भावनाओं, संघर्षों, आकांक्षाओं और विसंगतियों को बड़ी संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया है। साथ ही गीत और ग़ज़ल के अंतर्गत स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। स्त्री की अस्मिता की बात करते हुए उनकी समस्याओं पर बेबाकी से बात की गई है और की जा रही है। साथ ही गीत और ग़ज़ल के माध्यम से राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विषयों पर गीतकार एवं और ग़ज़लकारों ने लेखनी चलाई है। जिसका विस्तार से विवेचन इस विशेषांक के कई लेखों में देखने मिलेगा। इस विशेषांक के माध्यम से इस बात की ओर भी ध्यान दिया गया है कि गीत और ग़ज़ल सिर्फ मनोरंजन के साधन न होते हुए यह समाज को आईना दिखाने का काम बहुत ही कर रहे हैं और यह हमारे मानवी संवेदनाओं से गहराई से जुड़े हुए हैं।

प्रस्तुत अंक में व्यक्त विचार शोधकर्ता के अपने हैं, संपादक इससे सहमत हो यह जरूरी नहीं।

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात।

अनुक्रम

Sr. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	'बेदिल सरहदी के 'धूप खिली है ' गजलों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण'	डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण	1-7
2	गुलज़ार के गीतों में आम आदमी	प्रो.डॉ. नाजिम इसाक शेख	8-12
3	आरिफ महात कृत 'तूफानों में जलते दिये' गजल संग्रह में भाव और विचारों का निरूपण	डॉ. गीता दोड्डमणी	13-16
4	'तरकश' के आईने में जावेद अख़्तर	डॉ. अनंत केदारे	17-24
5	ज्ञानप्रकाश विवेक की गजलों में आर्थिक परिदृश्य	प्रो. डॉ. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	25-27
6	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में पर्यावरणीय विमर्श : प्रकृति, प्रदूषण और मानव सरोकार	प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंडी	28-31
7	भारतीय सिनेमा की समीक्षा भी एक साहित्यिक सृजन है...	प्रोफेसर (डॉ.) सुरेश कानडे	32-34
8	राजस्थानी लोक-गीतों में जन-जीवन की सांस्कृतिक प्रथा-परंपराएँ	डॉ . सुधा जांगिड	35-40
9	कुँअर बेचैन की हिंदी गजलों में प्रेम और विरह भाव	डॉ.सागर रघुनाथ कांबळे	41-43
10	हिंदी फिल्मी गीत: एक विवेचन	प्रो. डॉ. आबासाहेब हरिभाऊ राठोड इगडे शीतल कचरू	44-48
11	हिंदी ग़ज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक संघर्ष	प्रा. डॉ. दीपक विनायकराव पवार	49-52
12	राकेश कुमार सिंह के 'पठार का कोहरा' उपन्यास में आदिवासी लोकगीत	स्वयंपूर्णा विजय गायकवाड	53-56
13	परंपरा से प्रयोग तक: हिंदी फिल्मी गीत	सारिका मूंदड़ा	57-60
14	"दुष्यंत कुमार की गजल में सामाजिक और राजनीतिक चेतना" (दुष्यंत कुमार कृत "साये में धूप" के विशेष संदर्भ में)	पूनम प्रवीण पाटील,	61-64
15	दुष्यंत कुमार, फैज़ अहमद फैज़ और साहिर लुधियानवी के हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रतिरोधी स्वर: एक सामाजिक विश्लेषण	सिनगरवार पांडुरंग गिरजप्पा	65-67
16	लोकगीत साहित्य व संस्कृति	डॉ.अंजली महेश उबाळे	68-70
17	भोजपुरी और मैथिली के लोकगीतों में नारी चेतना	डॉ.आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी	71-74
18	'राष्ट्रकवि' प्रदीप के गीत	श्रीमती प्रतिभा दत्तात्रय अडगटला-मोहिते	75-78
19	हिंदी गजलो में स्त्री विमर्श	सोनाली रावसाहेब घालमे	79-84

20	हिंदी फिल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	सतिश बाळु हारपडे	85-88
21	हस्तीमल हस्तीजी के ग़ज़लों में चित्रित सामाजिक परिदृश्य	वैष्णवी संजय शिंदे	89-92
22	हिंदी फिल्मी गीतकार एवं गज़लकार	प्रा. सुषमा बाळाराम खोत	93-97
23	गज़लों में सामाजिक परिदृश्य	प्रा. प्रतिक्षा शांताराम ठुंबरे	98-101
24	आचार्य श्री सत्यनारायण गोयंका के गीतों में जीवन मूल्य	डॉ. अनिल काळे मुकुंदा ठोंबरे	102-106
25	राहत इंदौरी के 'गूँज' गजल संग्रह में प्रतिरोधी स्वर	डॉ. प्राजक्ता शिवाजी कुरळे	107-110
26	हिंदी फ़िल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	समद हबीब जमादार	111-113
27	हिंदी फिल्मों में गीत और गजल का महत्व	प्रा.अपर्णा संभाजी कांबळे	114-117
28	हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रगतिशील चेतना	मीरा सिन्हा	118-122
29	हिंदी ग़ज़ल में सौंदर्य एवं प्रेम का चित्रण	नम्रता पंडित मोहिते	123-128
30	हिंदी ग़ज़लों में राजनीतिक परिदृश्य	प्रा. हसीना मालदार	129-131
31	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी लोकगीतों का अध्ययन	प्रा. रविदास एस पाडवी	132-134
32	हिंदी साहित्य के गज़ल विधा में चित्रित नारी	नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	135-138
33	हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक परिदृश्य	प्रा. डॉ. प्रकाश महादेव निकम	139-143
34	हिंदी गीत और गजल में प्रगतिशील चेतना	प्रा डॉ. संजय नारायण पाटील	144-152
35	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में चित्रित राजनीतिक चुनौतियाँ	सुश्री. श्रीदेवी बबन वाघमारे	153-156